राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
वर्ष 36 अंक 12 मार्च 2016 मूल्य 5 रु. पृष्ठ 28

महाभारत

राष्ट्रद्रोह के खिलाफ देशभक्ति का ज्वार

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

संपादक मण्डल

आशुतोष

संजीव कुमार सिन्हा

अवनीश सिंह

अभिषेक रंजन

फोन : 011-23216298

ई-मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com

ब्लॉग :chhatrashaktiabvp.com

वेबसाईट :www.abvp.org

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए राजकुमार शर्मा द्वारा बी-50, विद्यार्थी सदन, क्रिश्चियन कॉलोनी, निकट पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली - 110007 से प्रकाशित एवं 102, एल. एस. सी., ऋषभ विहार मार्केट दिल्ली-92 से मुद्रित।

संपादकीय कार्यालय

''छात्रशक्ति भवन''

26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,

नई दिल्ली - 110002

अनुक्रमणिका

विषय	पृ. सं.
बस एक ही धुन... जय–जय भारत	5
देशद्रोह के खिलाफ अभाविप का 'नेशन फर्स्ट मार्च'	7
घातक राजनीति का अड्डा – शंकर शरण	9
'बेहतर कृषि व्यवस्था से देश का विकास संभव'	11
जेएनयू घटना बुद्धिजीवियों का बौद्धिक आतंकवाद : आंबेकर	12
बौद्धिक बेईमानी का तमाशा – राजीव सचान	13
दूषित मानसिकता का उपचार जरूरी	15
आंतरिक दुश्मनों से देश को बचाने की लड़ाई	17
बेहतर नागरिक बनाने वाली शिक्षा नीति की जरूरत	18
जेएनयू को भारत विरोधी अड्डा बनाते रहे है, वामपंथी – मनीष कुमार	19
हमें चाहिए आजादी...	21
जेएनयू की आवाज नहीं है कन्हैया	22
देश विरोधी नारे लगना आतंकी हमले की सोच जैसी खतरनाक	23
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से उठते सवाल – उमेश चतुर्वेदी	24
फीस वृद्धि के खिलाफ अभाविप का प्रदर्शन	26

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

1889 में भारत में दो विभूतियों का जन्म हुआ। डॉ केशव बलिराम हेडगेवार और पं. जवाहरलाल नेहरू। दोनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया। दोनों ने ही तत्कालीन सामाजिक–राजनैतिक जीवन पर अपनी छाप छोड़ी। दोनों ने कांग्रेस में साथ–साथ काम किया। दोनों कुछ समय तक हिंदू महासभा की गतिविधियों में भी शामिल हुए।

नेहरू ने जहां कांग्रेस में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया वहीं हेडगेवार ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। कांग्रेस जहां राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए प्रयत्नशील थी, वहीं संघ राष्ट्रवादी चिंतन के साथ देश में हिन्दू पुनर्जागरण के लिए प्रयत्नशील था। भारत को स्वतंत्र और वैभवशाली बनाना दोनों का उद्देश्य था।

हेडगेवार को नियति ने अधिक समय नहीं दिया। 1940 में उनकी मृत्यु हो गयी। नेहरू उसके बाद भी 25 वर्षों तक देश का नेतृत्व करते रहे। प्रधानमंत्री भी रहे। सत्ता और संगठन, दोनों ही उनके नियंत्रण में थे। उधर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी हेडगेवार के दिखाये मार्ग पर सधे कदमों से चलता रहा।

डॉ हेडगेवार की जयंती आगामी वर्ष प्रतिपदा को है जो 8 अप्रैल को पड़ेगी। यह तो उनके स्मरण का एक कारण है ही, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में चल रहे घटनाक्रम ने इस स्मरण को और भी प्रासंगिक बना दिया है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत के एकीकरण की जो प्रक्रिया प्रारंभ हुई उसमें जम्मू–काश्मीर में व्यवधान आया। यह व्यवधान आज भी दूर नहीं हो सका है। पं. नेहरू इस मामले को स्वयं देख रहे थे। आज उनके नाम पर बने विश्वविद्यालय में काश्मीर की आजादी के नारे लग रहे हैं।

काल का चक्र पूरा घूम चुका है। विडंबना यह है कि देश को तोड़ने और बरबाद करने के नारे लगाने वालों के समर्थन में उनकी अपनी ही पार्टी के रहनुमा राहुल गांधी जा खड़े हुए हैं। दूसरी ओर राष्ट्रवादी शक्तियां हैं जिनकी अगुवाई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से अनुप्राणित संगठन कर रहे हैं।

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में हालिया घटनाओं में जिस तरह जेहादी–वामपंथी गठजोड़ के पक्ष में कथित सेकुलर दल उमड़े हैं वह हतप्रभ करने वाला है। मोदी विरोध की राजनीति राष्ट्रविरोध तक भी जा सकती है यह सोचा न था। लेकिन यह सत्य है इसलिए राष्ट्रवादी शक्तियों के समक्ष इसका सामना करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। हमेशा की तरह देश की जनता इस बार भी खरी साबित हुई है। जो प्रतिक्रिया आम जन के बीच से आई है उसी के चलते वामपंथियों को अपनी सभा में तिरंगे हाथ में लेने पड़े। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय परिसर ने वामपंथियों को भारत के प्रति अपनी निष्ठा साबित करने और लोकतंत्र में अपनी आस्था की दुहाई देते पहली बार देखा है। वास्तव में राष्ट्रवादी शक्तियों की यह पहली जीत है।

वामपंथियों का इतिहास देखते हुए यह कहा जा सकता है कि तिरंगा फहराने के पीछे तात्कालिक दवाब टालने की ही नीति है न कि कोई प्रायश्चित का भाव। यह केवल समय खरीदने की कोशिश है और इस बीच देश भर में टूट गये अपने सूत्रों को जोड़कर आगे की रणनीति तैयार करने का प्रयास।

देश में अनेक जगहों से उनके लिए आने वाली समर्थन की आवाजें चिंतित करने वाली हैं। लेकिन जिस तरह इसके विरुद्ध पूर्व सैनिकों के नेतृत्व में हजारों लोग भारत माता की जय के नारे लगाते दिल्ली की सड़कों पर उमड़े, वह विश्वास जगाने वाला था। सोशल मीडिया में भी राष्ट्रवाद के समर्थन में जो प्रवाह जारी है वह अभूतपूर्व है।

आज देश में सीधा–सीधा विभाजन दिखाई दे रहा है। एक प्रकार का महाभारत है यह। दोनों शक्तियां पूरी ताकत से इस महासमर में सक्रिय हो चुकी हैं। निर्णय आपको लेना है। तथ्यों और तर्कों के आधार पर आप तय करिए कि आप सत्य के साथ खड़े हैं या असत्य के, आप तय करें कि आप भारत के पक्ष में हैं या उसकी एकता–अखण्डता के विरुद्ध। अराष्ट्रवादी ताकतें अपनी पूरी शक्ति देश को पीछे ढ़केलने में लगा रही है। हमें भी पूरी ताकत से उनका सामना करना होगा और उनके इरादों को नाकाम बनाना होगा। अभाविप की दिशा स्पष्ट है और लक्ष्य भी स्पष्ट। भारतीय नववर्ष के अवसर पर भारतीयता की संस्थापना और परिसरों में भारतविरोधी विचारों के उन्मूलन के लिए संकल्प, यह हर कार्यकर्ता के समक्ष तात्कालिक लक्ष्य है।

बस एक ही धुन... जय-जय भारत...

शहीदों के सम्मान में व देशद्रोहियों के खिलाफ अभाविप ने भरी हुंकार

नई दिल्ली। शहीदों को नमन, वंदे मातरम् और भारत माता की जयकार के बीच अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने छात्र हुंकार रैली निकाली। राष्ट्र विरोधियों के खिलाफ 'मौन तोड़ो – हल्ला बोलो' के नारे के साथ रामलीला मैदान से जंतर–मंतर तक हजारों की संख्या में छात्रों ने मार्च किया। 'जो अफजल के यार हैं, देश के गद्दार हैं', 'वीर शहीदों का अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान' जैसे नारे लगाते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, संस्कृत विद्यापीठ, इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, अम्बेडकर विश्वविद्यालय तथा एनसीआर के अनेक शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों ने रैली में प्रतिभाग किया।

हाथों में सैनिकों की तस्वीरों और उनके सम्मान में लिखे 'भारतीय सेना जिंदाबाद' के नारों की तख्तियां लिए परिषद् के कार्यकर्ताओं ने शहीदों को याद किया। छात्रों के हाथों में तिरंगा, भगवा झंडा के साथ ही अंबेडकर की भी तस्वीर थी। जेएनयू विवाद पर छात्रों का आक्रोश नारों के साथ फूटा। सभी की एक ही मांग थी कि देश विरोधी नारे लगाने वालों को सख्त से सख्त सजा सुनाई जाये, ताकि कभी कोई ऐसी हिमाकत ना करे।

इस रैली की खासियत यह रही कि अन्य छात्र संगठनों की विरोध सभाओं से इतर इस छात्र प्रदर्शन ने राजनेताओं से दूरी बनाए रखी। यह रैली जंतर–मंतर पर जनसभा में तब्दील हो गई। जहां मंच पर भाषण देने वाले भी विद्यार्थी थे, तो सुनने वाले भी विद्यार्थी रहे। रैली के दौरान के दौरान 160 फीट लंबा तिरंगा आकर्षण का केंद्र रहा।

रैली में छात्रों को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय मीडिया संयोजक साकेत बहुगुणा ने कहा कि जेएनयू की घटना के बाद वामपंथियों का असली

चेहरा उजागर हो गया है। एक ओर तो वामदल का छात्र संगठन सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर देश को तोड़ने तथा पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाता है तो वहीं उनके राजनीतिक आका हर बात को सही ठहराने की जद्दोजहद करते हैं। आखिर ऐसी क्या मजबूरी है कि उन्हें देश में रहना भी है और देश के खिलाफ नारे भी लगाने हैं।

साकेत ने कहा कि अफजल जैसे आतंकियों का समर्थन करना ही वामपंथी विचार धारा है, जेएनयू को तो बस ढाल बनाकर बदनाम करने की कोशिश की जा रही है। लेकिन अभाविप चंद वामपंथी गद्दारों–अलगाववादियों की साजिश को सफल नहीं होने देगा और ना ही जेएनयू की साख पर कोई बट्टा लगने देगा।

आतंकियों के समर्थक बने कुछ राजनेता : सुनील आंबेकर

रैली को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आम्बेकर ने कहा कि यह देश का दुर्भाग्य है कि हमारे एक उच्चकोटि के एक विश्वविद्यालय में भारत को टुकड़ों में तोड़ने के नारे लगते हैं और उसके बाद कई नेता वहां जाकर उन देशद्रोहियों का समर्थन करते हैं। हमारे लोकतंत्र के स्तम्भ हमारे संसद में हुए शहीदों का अपमान करते हुए उसी संसद के कुछ सदस्य आज वहां हमला करने वाले अफजल गुरु के साथ खड़े हैं। हम इसकी निंदा करते हैं। उन्होंने कहा कि जेएनयू में चंद विध्वंसक वामपंथी शिक्षक ऐसे हैं, जो देश विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा देने में जुटे हैं। उन्होंने नक्सलियों और आतंकवादियों के लिए जेएनयू को सपोर्ट ग्राउंड बना दिया है। यह घटना पहली बार नहीं है, जब जेएनयू में देश के टुकड़े–टुकड़े करने वाले नारे लगे हैं या संसद हमले के मास्टरमाइंड अफजल गुरु का शहादत दिवस मनाया गया। उन्होंने कहा कि इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है कि देशविरोधी गतिविधियों को सीमापार से भी शह मिल रहा है।

अपने संबोधन में साकेत बहुगुणा ने कहा कि एफटीटीआई, हैदराबाद विश्वविद्यालय में रोहित वेमुला आत्महत्या और अब जेएनयू की घटना यह सब देश में अस्थिरता लाने की कोशिश है। जबसे विकास कार्यों की प्रतिबद्धता के साथ केंद्र में मोदी सरकार सत्ता में आयी है तभी से इन्हें अपने वजूद के खोने का भय सता रहा है।

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री विनय बिदरे ने कहा कि जेएनयू को वामपंथियों ने अपनी प्रयोगशाला बना दिया है। वहां से नक्सली व आतंकियों के स्लीपर मॉड्युल्स निकल रहे हैं। इसलिए वहां नक्सलियों और आतंकवादियों पर सेमिनार और रिसर्च होते हैं। नक्सलियों द्वारा अर्ध सैनिक बल के जवानों की हत्या पर मिठाइयां बांटी जाती हैं। उन्हें बेनकाब करने के साथ गिरफ्तार कर जेल भेजने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि देश में चल रहे वैचारिक बहस में देश विरोधियों के खिलाफ राष्ट्रवादी शक्तियां एकजुट होकर खड़ी हैं।

गौरतलब है कि जेएनयू में एक कार्यक्रम में कथित रूप से भारत के विरुद्ध नारेबाजी की गई थी। इस कार्यक्रम में संसद पर हमले के दोषी अफजल गुरु के समर्थन में नारे लगाए गए। इस मामले कुछ आरोपी छात्र फिलहाल पुलिस हिरासत में हैं और कानूनी कार्यवाही चल रही है।

देशद्रोह के खिलाफ अभाविप का 'नेशन फर्स्ट मार्च'

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय परिसर में लगे राष्ट्रविरोधी नारे व देशद्रोहियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होने के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने देशभर में 'नेशन फर्स्ट मार्च' निकाला। अभाविप के नेशन फर्स्ट मार्च को आम जनमानस का भी भरपूर समर्थन मिला है। अभाविप देश भर में रैलियों और मार्च के जरिए देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने के भाव का प्रचार कर रही है।

बीते दिनों जेएनयू में छात्रों द्वारा लगाए गए देश विरोधी नारों से पूरा देश आहत है। ऐसे में राष्ट्रद्रोही गतिविधियों के खिलाफ आवाज उठाने और दोषियों को सजा दिलाने की दिशा में अभाविप लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में अभाविप द्वारा राष्ट्रवादियों को एकजुट करने के उद्देश्य से देश भर में 'नेशन फर्स्ट मार्च' का आह्वान किया गया जिसमें हजारों की संख्या में लोगों ने मार्च में भाग लिया।

अभाविप के आह्वान का असर अलमोड़ा (उतराखंड) में भी देखने को मिला। यहां भी विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में नेशन फर्स्ट मार्च निकाला गया। एसएसजे परिसर से शुरू हुई यह यात्रा माल रोड होते हुए नगर चौक तक गयी, इस दौरान आम लोग भी मार्च के समर्थन में नारे लगाते दिखे। मार्च को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि संविधान ने हमें अभिव्यक्ति की आजादी दी है तो इसका मतलब यह नहीं कि जेएनयू जैसे घटनाओं की छूट मिल गयी है। देश के खिलाफ बोलने या नारे लगाने का अधिकार किसी को भी नहीं दिया जा सकता। वक्ताओं की माने तो वामपंथी विचारधारा से प्रेरित संगठनों ने सांस्कृतिक संध्या के आयोजन के बहाने जिस तरह देश विरोधी नारे लगाए, उससे देशभक्त नागरिक आहत हैं। ऐसे में हमारी मांग है देशद्रोहियों पर कठोर कार्रवाई की जाए।

इसी क्रम में कटक (उड़ीसा) में भी अभाविप कार्यकर्ताओं ने जेएनयू प्रकरण के विरोध में मार्च निकाला। इस दौरान एक सभा का भी आयोजन किया गया, जिसमें वक्ताओं ने कहा कि अफजल गुरु के समर्थन व देश को विखंडित करने वालों का नारा लगाने वालों की जितनी निंदा की जाए कम है। ऐसे में अभाविप सरकार से मांग करती है कि दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की जाए ताकि देश विरोधी ताकतें सिर न उठा सकें।

वाराणसी में भी अभाविप कार्यकर्ताओं ने रैली के माध्यम से देशद्रोह के खिलाफ अपना आक्रोश जताया। इस दौरान काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के सिंहद्वार पर विद्यार्थी परिषद् और आइसा कार्यकर्ताओं के बीच झड़प भी हुई। आइसा के सदस्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विरोध और जेएनयू के बंदी अध्यक्ष कन्हैया कुमार के पक्ष में नारे लगा रहे थे, जिसको लेकर दोनों पक्ष आमने–सामने आ गये। मौके पर मौजूद पुलिस ने किसी तरह झड़प

के बीच टाला बवाल, आइसा के सदस्यों को गिरफ्तार किया।

जेएनयू में देश विरोधी नारे लगाए जाने के विरोध में अभाविप सिलीगुड़ी (पं बंगाल) में भी परिषद् कार्यकर्ताओं ने नेशन फर्स्ट मार्च निकालकर देशद्रोहियों को कड़ा संदेश दिया। परिषद् के कार्यकर्ताओं का कहना था कि देशद्रोही या फिर उनका समर्थन करनेवालें किसी भी जाति या धर्म का क्यों न हो सभी को सख्त सजा मिलनी चाहिए। जो सजा एक आतंकी को मिलती है वही सजा देशविरोधी नारा लगाने वाले देशद्रोहियों को देनी चाहिए। कन्हैया के अलावा अन्य आरोपियों को भी जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाना चाहिए।

जेएनयू प्रकरण के विरोध में बुलंदशहर में भी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं ने तिरंगा मार्च निकाला। तिरंगा मार्च नगर के रेलवे रोड से शुरू होकर पैठ चौराहा, बड़ा बाजार, घंटा घर होते हुए आजाद पार्क पर सम्पन्न हुआ। जहां छात्र नेता विक्रांत राघव ने मार्च को संबोधित करते हुए कहा कि देश के खिलाफ जहर उगलने वाले किसी भी मुख को अभिव्यक्ति की आजादी नहीं दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसे विश्वविद्यालय में नव युवाओं को जो देश के खिलाफ गलत मार्गदर्शन दिया जा रहा है उसका विरोध विद्यार्थी परिषद करती रहेगी।

पटना में भी जेएनयू में घटी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के खिलाफ लोगों में गुस्सा देखने को मिला। अभाविप के नेशन फर्स्ट मार्च के तहत निकली रैली में काफी संख्या में आम लोग भी शामिल हुए। रैली को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय मंत्री निखील रंजन ने कहा कि देश और प्रदेश में अराजक स्थिति पैदा करने की साजिश की जा रही है। समूचा देश जान रहा है कि जेएनयू में किस प्रकार के भारत विराधी नारे लगाये गए। कोई देशभक्त या राष्ट्रभक्त समाज इस कृत्य को स्वीकार नहीं कर सकता।

जेएनयू मामले को लेकर रांची में अभाविप के द्वारा 'नेशन फर्स्ट' इंडिया फर्स्ट' के थीम पर एक रैली रांची विश्वविद्यालय परिसर से शहीद चौक तक निकाली गई। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने 'भारत मां शर्मिंदा है, अफजल समर्थक जिंदा हैं'। 'भारत माता की जय', 'वंदे मातरम' जैसे नारे लगाए। इस दौरान, राष्ट्रीय मंत्री आशिष चौहान ने बताया कि कन्हैया का वीडियों पूरे मीडिया जगत में वायरल हो गया है। वामपंथी कन्हैया को क्यों बचा रहे है? साथ ही अभी तक अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी ना होना समझ से परे है।

वहीं गुजरात में भी अभाविप के सदस्यों ने जेएनयू में लगे राष्ट्रविरोधी नारों के खिलाफ मार्च निकाला। जम्मू कोर्ट में भी वकीलों ने जेएनयू में हुई घटना को लेकर प्रदर्शन किया।

अभाविप कार्यकर्ताओं ने विकासनगर में भी एकता रैली निकाली और युवाओं से राष्ट्र के लिए एकजुट होने की अपील की। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के छात्र संघ महासचिव दिव्या राणा ने कहा कि राष्ट्र के निर्माण का दायित्व छात्रों पर ही होता है, लिहाजा पूरे राष्ट्र के छात्रों को जाति, धर्म, संप्रदाय की मानसिकता से ऊपर उठकर राष्ट्रहित के लिए एकजुट होना होगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्र विरोधी ताकतों से निपटने के लिए शिक्षण संस्थानों में ऐसी ताकतों के प्रवेश पर रोक लगाई जानी चाहिए।

घातक राजनीति का अड्डा

✍ शंकर शरण

यह संयोग नहीं कि दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) से किसी चर्चित शोध, अध्ययन, आविष्कार या लेखन संबंधी कोई समाचार सुनने को नहीं मिलता। साहित्य, कला, खेलकूद, रंगमंच या नीति, कूटनीति निर्माण में भी वहां से कोई उल्लेखनीय योगदान नहीं मिला। यहां तक कि वहां से कोई जानी–मानी शोध पत्रिका या सामान्य विद्वत पत्रिका तक प्रकाशित नहीं हो सकी जिसे कोई अध्येता पढना आवश्यक समझे। यह स्थिति तब है जब वह देश भर में केंद्र सरकार से प्रति छात्र और प्रति अध्यापक सर्वाधिक अनुदान पाने वाला विश्वविद्यालय है। कितनी शर्मनाक बात है कि कुछ पहले एक बार जब एक संवाददाता ने जेएनयू की चार दशक की उपलब्धियों के बारे में पूछा तो वहां के बड़े अधिकारी का उत्तर था कि अब तक सिविल सर्विस में इतने छात्र वहां से चुने गए। वे कोई और उपलब्धि नहीं गिना पाए। क्या इसीलिए वह विश्वविद्यालय बना था कि वहां सिविल सर्विस की तैयारी या विभाजक और तरह–तरह की रेडिकल राजनीतिबाजी के आरामदेह अड्डे बनें।

वस्तुतः यह दोनों बातें ज्ञान–चिंतन में योगदान का अभाव और राजनीतिबाजी एक दूसरे की पूरक हैं। दोनों मिलकर एक दुष्चक्र बनाते हैं। जेएनयू में राजनीतिक एक्टिविज्म कक्षा से बाहर नहीं, समाज विज्ञान और मानविकी विषयों के सिलेबस और पाठ्यसूची में भी है। यही कारण है कि वहां हर तरह के रेडिकलिज्म को फौरन जमीन मिल जाती है। संसद पर हमला करने वाले जिहादी आतंकवादी को हीरो बनाना उसी परंपरा की नवीनतम कड़ी है। इससे पहले लोकसभा चुनाव दौरान समाचार आए थे कि जेएनयू से छात्र और प्रोफेसर दल बनाकर बनारस में नरेंद्र मोदी के विरुद्ध प्रचार करने गए थे। यह किस प्रकार की शैक्षिक गतिविधि है जिस पर भारतीय जनता के टैक्स का करोड़ों रुपया प्रति वर्ष बर्बाद किया जाता है।

एक ओर जेएनयू में हर तरह के देशी–विदेशी भारत निंदकों को सम्मानपूर्वक मंच मिलता है, किंतु दूसरी ओर देश के गृहमंत्री (पी. चिदंबरम) को बोलने नहीं दिया जाता। यहां तक कि उनके आगमन के विरुद्ध आंदोलन होता है। यह कोई नई बात नहीं। पैंतीस वर्ष पहले वहां देश की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को भी बोलने नहीं दिया गया, जबकि लेनिन, स्टालिन, माओ और यासिर अराफात के लिए प्रोफेसर और छात्र मिलकर आहें भरते थे। जिन्होंने इंदिरा गांधी को जेएनयू कैंपस आने से सफलतापूर्वक रोका उनमें कई आज वहां प्रोफेसर नियुक्त हैं। अतः जेएनयू में भारत विरोधी, हिंदू विरोधी राजनीति कोई अभिव्यक्ति स्वंतत्रता का मामला नहीं, क्योंकि वहां देशभक्त स्वरों को वही अभिव्यक्ति अधिकार नहीं मिलते, न ही उनकी नियुक्ति होने दी जाती है। यह एक संगठित अकादमिक–राजनीतिक षड्यंत्र है, जो दशकों से जारी रहकर ऐसी जड़ जमा चुका है कि सरसरी तौर पहचाना नहीं जा सकता। सारी जबर्दस्ती अकादमिक लबादे में होती है। यदि वहां चलती रही गतिविधियों की जांच हो तब पता चलेगा कि क्यों इसी विशेष कैंपस में हर प्रकार की घातक राजनीति को पनाह मिली है।

पुराने वामपंथी प्रोफेसरों ने वहां राजनीतिक प्रोपेगंडा को अकादमिक योगदान में बदल कर रख दिया। देश भर से आने वाले भोले–भाले, अबोध युवा यह नहीं समझ पाते। वे समाज विभाजक, देश विरोधी प्रोपेगंडा से सजे सिलेबस, साहित्य आदि को उच्च शिक्षा मानकर आत्मसात कर लेते हैं। यह है वहां विषबेल फैलने का एक रहस्य। पुराने वामपंथी प्रोफेसरों का रिकॉर्ड भी इसे दर्शाता है। सच तो यह है कि जेएनयू में सिविल सर्विस आकांक्षियों को मिलने वाली लाजबाव सुविधाएं और रेडिकलिज्म के फैशन से कड़वी सच्चाई छिपी रही है कि उपलब्धि के

नाम पर उन नामी प्रोफेसरों के पास भी कहने के लिए कुछ नहीं। अभी–अभी पुरातत्ववेत्ता के. के. मुहम्मद की आत्मकथा से भी पुष्टि हुई है कि जेएनयू के मार्क्सवादी इतिहास प्रोफेसरों ने देश की कितनी गहरी हानि की। हमारे देश के स्वार्थी, अज्ञानी नेताओं की गैर–जिम्मेदारी के कारण यह सब छिपा रहा है, क्योंकि सेक्युलरिज्म के नाम पर वे हर तरह की देशद्रोही, हिंदू विरोधी सक्रियता को सहयोगी बना लेते हैं। इसीलिए जेएनयू कभी जांच–पड़ताल का विषय नहीं बनता, जबकि समाज विज्ञान और मानविकी विषयों के मद में वहां होने वाला अतुलनीय खर्च अधिकांश नकली या हानिकारक कार्यों में जाता है। अधिकांश प्रोफेसर अपने शोधार्थियों के नकली काम को इसलिए तरजीह देते हैं कि वह सिविल सर्विस की तैयारी कर रहे हैं या उनके विचारों वाले एक्टिस्ट हैं। उस निरर्थकता को प्रोफेसर जान–बूझकर नजरअंदाज करते हैं ताकि कथित शोधार्थियों को साल दर साल हॉस्टल की सुविधा मिलती रहे। इस प्रकार प्रति छात्र जो लाखों रुपये शोध अध्ययन करने के नाम पर खर्च हुए वह सीधे पानी में जाते हैं। अधिकांश प्रोफेसरों की हालत भी लगभग समानांतर है। कई तो राजनीतिक सरगर्मियों में ही अधिक समय देते हैं। जेएनयू के सबसे प्रसिद्ध इतिहास प्रोफेसर ही इसके अच्छे उदाहरण हैं। उनके संपूर्ण लेखन का सार–संक्षेप दो–चार पृष्ठों में लिखा जा सकता है, क्योंकि उनमें किसी ज्ञान, शोध के बजाय राजनीतिक संदेश की केंद्रीयता रही है जो अत्यंत सीमित है।

यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा की आड़ में युवाओं के लिए मुख्यतः नौकरी की खोज या वामपंथी राजनीति में कॅरियर बनाने वालों का अड्डा भर रहा है। नौकरी की खोज यहां का प्रमुख सेक्युलर कार्य है तो हिंदू विरोधी राजनीति प्रमुख मजहबी कार्य। इन्हीं दो कार्यों को वहां पारंपरिक ढांचागत समर्थन मिलता है। हिंदू विरोधी, सरकार विरोधी और प्रायः देश विरोधी राजनीति का समर्थन। विडंबना यह कि यह सब करने के लिए सारा धन उसी हिंदू जनता, सरकार और देश से लिया जाता है। इस प्रकार सर्वाधिक संसाधन युक्त इस केंद्रीय विश्वविद्यालय में सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा पूरी तरह दिखावटी काम में बदल कर रह गई है। यह भी एक स्कैम है, एक अपराध। जिस उद्देश्य से जेएनयू की स्थापना हुई थी वह बहुत पहले कहीं छूट गया। बल्कि उस उद्देश्य से वहां कार्य का आरंभ ही नहीं हुआ। इसीलिए जब भी जेएनयू की चर्चा होती है तो गलत कारणों से।

(लेखक एस. शंकर, बड़ौदा के महाराजा सायाजी राव विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं)

यह लेख दैनिक जागरण में 13 फरवरी 2016 को प्रकाशित है।

प्रिय मित्रों,

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का मार्च 2016 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों तथा खबरों का संकलन किया गया है। आशा है यह अंक आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा।

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव एवं विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई–मेल पर अवश्य भेजें।

''छात्रशक्ति भवन''

26, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग

नई दिल्ली – 110002

फोन : 011–23216298

ई–मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com

वेबसाईट : www.abvp.org

'बेहतर कृषि व्यवस्था से देश का विकास संभव'

जबलपुर में अभाविप का राष्ट्रीय कृषि छात्र सम्मेलन संपन्न

जबलपुर। किसानों के विकास में ही देश का विकास निहित है। जो किसानों की चिंता नहीं कर सकता, वह हिंदुस्तान के विकास की भी चिंता नहीं कर सकता। संप्रग की पिछली सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि मां–बेटे की सरकार में देश और किसानों के विकास के लिए नारे तो खूब लगते थे, लेकिन यह विकास परिवार तक ही सीमित रहा।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह

उक्त बातें केंद्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह ने जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कृषि छात्र सम्मेलन में कहीं। उन्होंने कहा कि जो काम बरसों पहले हो जाना चाहिए था, वह आज हो रहा है। भाजपा सरकार में आपदा के लिए मुआवजा राशि में 33 फीसदी तक बढ़ोत्तरी हुई है। जैविक खेती, सिंचाई के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सिंचाई योजना शुरू की गयी। कृषि के क्षेत्र में बेहतर कार्य किए जाने को लेकर इस प्रकार की कार्याशाला के आयोजन हेतु अभाविप बधाई के पात्र है।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि मृदा को स्वास्थ बनाने के लिए स्वाइल हेल्थ कार्ड अब हर किसान की जेब में होगा। पांच करोड़ किसानों को अपने वित्तीय वर्ष में हेल्थ कार्ड प्रदान कर दिये जायेंगे। इसके लिए 288 करोड़ का प्रावधान सरकार ने रखा है।

वहीं, कार्यक्रम के अतिथि वेटरनरी काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डा. उमेश शर्मा ने कहा कि कृषि को लाभ का धंधा बनाने के लिए प्रयास होने चाहिए। ताकि लोग कृषि को भी रोजगार के तौर पर देखे और उससे जुड़ने को प्रेरित हों। जबकि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री के. एन. रघुनंदन ने कहा कि भारतीय कृषि पद्धति को शिक्षा प्रणाली में जोड़ने की आवश्यकता है। कृषि में भी ग्रेडिंग सिस्टम लागू किया जाना चाहिए। जिससे जरूरी शिक्षण के तौर पर छात्रों को आधारभूत जानकारी तो कृषि के जुड़े तथ्यों की हो सके।

ई–ट्रेडिंग से जुड़ेंगी 50 मंडियां

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि किसानों को फसल का ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके और बिचौलियों की भूमिका खत्म हो, इसके लिए राष्ट्रीय ई–ट्रेडिंग मार्केट पर सरकार तेजी से काम कर रही है। प्रदेश के 50 मार्केट को ई–ट्रेडिंग से जोड़ा जा रहा है। सितंबर तक 200 मंडी जोडने का लक्ष्य है। जैविक खेती की दिशा में भी उच्च स्तर पर काम चर रहा है। देश में 8000 क्लस्टर बनाये गये हैं।

क्या अमेरिका बर्दाश्त करेगा लादेन के पक्ष में नारे

नई दिल्ली। अमेरिका भले ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात करे लेकिन क्या वहां किसी विश्वविद्यालय में ओसामा बिन लादेन के लिए नारेबाजी होती है। या फिर वहां की सरकार लादेन की याद में मोमबत्तियां जलाने की अनुमति देती है। क्या अमेरिका ओसामा के पक्ष में नारे बर्दाश्त करेगा? अगर नहीं तो फिर भारत को इस प्रकार के सुझाव देने का उसे कोई हक नहीं है। उक्त बातें पूर्व मेजर जनरल जी. डी. बख्शी ने अमेरिकी राजदूत रिचर्ड बर्मा पर निशाना साधते हुए कहीं।

उन्होंने कहा कि आज यदि अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा हैं तो इसकी बड़ी वजह यह है कि वे अमेरिका की सीमा में पैदा हुए हैं। वे वहां के नागरिक हैं। राष्ट्रवाद पर बहस हो सकती है, लेकिन जब हम देश से बाहर जाते हैं तो हमसे पूछा जाता है कि आपका राष्ट्र कौन सा है। उन्होंने कहा कि जो लोग आज अलग कश्मीर की बात करते हैं वे कल मणिपुर, असम, नागालैंड की बात करेंगे। देश एक शरीर है, क्या आप यह कह सकते हैं कि अपने शरीर का एक हिस्सा हमें दे दीजिए।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में बीते 9 फरवरी की घटना के बाद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के तत्वावधान में पहली आम सभा प्रशासनिक भवन के बाहर आहुत हुई। इस दौरान, सैकड़ों विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए जी. डी. बख्शी ने कहा कि पंपोर में शहीद हुए कैप्टन पवन और महाजन ने जेएनयू से पढ़ाई की थी। उन्होंने इस देश के लिए जान गंवाई, लेकिन क्या इस कैंपस में उनके लिए आंसू निकले। लेकिन, मुझे खुशी है कि कुछ छात्रों ने हमें यहां बुलाया है और उन शहीदों को याद किया है।

जेएनयू घटना बुद्धिजीवियों का बौद्धिक आतंकवाद : आंबेकर

नागपुर। जेएनयू कैंपस में सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपलक्ष्य में कुछ विद्यार्थियों ने देश विरोधी नारेबाजी की। उनके समर्थन में उतरने वाले कुछ लोगों ने घटना के जरूरत से ज्यादा महत्व दिया है। इस तरह मीडिया के कारण यह विषय देश के सामने आया है। वहीं विद्यापीठ के कुछ प्रोफेसर तक सरकारी वेतन लेकर भी छात्रों को देश के गौरव को नुकसान पहुँचाने वाला गलत इतिहास सिखा रहे हैं। यहीं नहीं शोध के नाम पर छात्रों को अपने ही देश के प्रति नास्तिक बनाने का प्रयास कर रहे हैं। यह एक प्रकार से बुद्धिजीवियों का शैक्षणिक आतंकवाद है।

उक्त बातें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने युवा जागरण समिति द्वारा आयोजित 'जेएनयू मामले का तथ्य' विषयक व्याख्यान में कहीं। श्री आंबेकर ने कहा कि अब समय आ गया है कि राष्ट्रवादी लोग देश की खिलाफत करने वालों के विरूद्ध मुखर हों।

राष्ट्रीय संगठन मंत्री ने कहा कि युवाओं के मन में देश संबंधी गौरवपूर्ण कार्यों को भुलाने का अलग–अलग स्तर पर प्रमुखता से जेएनयू में किया जा रहा है। कैंपस में रिसर्च के नाम पर भ्रमित करने वाली जानकारी देने के साथ ही शैक्षणिक पुस्तकों के माध्यम से उपलब्ध कराई जाती है।

आंबेकर ने बताया कि इस संदर्भ में जेएनयू में कौन सा अनुसंधान चल रहा है, इसकी सूची मंगवाई गयी है। इस मामले में कुछ लोग कैसे देशद्रोही कार्य कर रहे हैं, इसका भी पता चला है। इसलिए जेएनयू की घटना सिर्फ एक विद्यापीठ की घटना नहीं है।

बौद्धिक बेईमानी का तमाशा

✍ राजीव सचान

अपने देश में बुद्धिजीवियों को परिभाषित किया जाना इसलिए थोड़ा कठिन है, क्योंकि कोई भी खुद को बुद्धिजीवी करार दे सकता है। भारत में आमतौर पर हर वह शख्स बुद्धिजीवी है जो साहित्यकार, लेखक, पत्रकार, कलाकार के तौर पर जाना जाता है। कई नेता भी बुद्धिजीवी के तौर पर जाने जाते हैं और नौकरशाह भी। संगोष्ठी–सेमिनार में बोलने वाले और प्रोफेसर तो अनिवार्य रूप से बुद्धिजीवी कहलाते हैं। इनमें से कई प्रख्यात बुद्धिजीवी कहलाने लगते हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि वे तर्कसंगत–न्यायसंगत लेखन–वाचन–चिंतन भी करते हों। इसकी एक बानगी तब मिली जब जेएनयू मसले पर मुकुल केसवन ने एक अंग्रेजी दैनिक में लिखा–'राजनाथ सिंह को पता होना चाहिए कि कन्हैया कृष्ण का ही दूसरा नाम है।' वह इतने तक ही सीमित नहीं रहे। उन्होंने कृष्ण के बालजीवन का उल्लेख करते हुए कन्हैया कुमार की मां मीना देवी को यशोदा भी करार दिया। निपट मूर्खता और बौद्धिक बेईमानी की यह इकलौती मिसाल नहीं है। न जाने कितने कथित बुद्धिजीवी जेएनयू में देश विरोधी नारे लगाने वालों को महज राजनीतिक असहमति प्रकट करने वाला बताने पर आमादा हैं। इसके लिए वे देश विरोधी नारों का जिक्र करने से तो कन्नी काट ही रहे हैं, उन पोस्टरों की भी अनदेखी कर रहे हैं जो अफजल गुरु के समर्थन में जेएनयू में चस्पा किए गए थे। इन पोस्टरों में अफजल गुरु को शहीद बताने के साथ ही उसके अधूरे अरमानों को पूरा करने का संकल्प व्यक्त किया गया था। जेएनयू छात्रसंघ अध्यक्ष ने देश विरोधी नारे लगाए या नहीं, यह जांच का विषय है। इसी तरह यह भी बहस का विषय है कि क्या ऐसे नारे लगाने वालों पर देशद्रोह का ही मुकदमा दर्ज किया जाना चाहिए? यह बहस सही दिशा में तभी आगे बढ़ सकती है जब बौद्धिक बेईमानी का परित्याग किया जाए।

भारत की बर्बादी तक, कश्मीर की आजादी तक जंग रहेगी–जंग रहेगी, भारत तेरे टुकड़े होंगे–इंशाअल्लाह इंशाअल्लाह, अफजल हम शर्मिंदा हैं–तेरे कातिल जिंदा हैं... ये वे नारे हैं जो 9 फरवरी को जेएनयू परिसर में लगाए गए। इस नारेबाजी पर दिल्ली पुलिस की कार्रवाई का विरोध करने वाले भूले से भी इन नारों का जिक्र नहीं कर रहे हैं। उलटे बड़े भोलेपन से पूछ रहे हैं कि मोदी सरकार राजनीतिक असहमति के प्रति इतनी आक्रामक क्यों है? अगर भारत की बर्बादी के नारे लगाना केवल राजनीतिक असहमति भर है तो फिर हाफिज सईद की भारत विरोधी रैलियों पर आपत्ति का भी कोई मतलब नहीं रह जाता। कथित बुद्धिजीवियों के शातिर तबके ने उन वीडियो पर तो कोई ध्यान नहीं दिया जिनमें अफजल गुरु के पोस्टरों के साथ देश विरोधी नारे लगाए जाते देखा–सुना जा सकता है, लेकिन संदिग्ध किस्म के उस वीडियो का संज्ञान अवश्य लिया जिसमें कथित तौर पर विद्यार्थी परिषद के छात्र श्पाकिस्तान जिंदाबादय कहते हैं। इसका संज्ञान कई पत्रकारों, कलाकारों ने भी लिया। बौद्धिक बेईमानी की ऐसी ही मिसाल हाफिज सईद के ट्वीट को लेकर पेश की गई।

किसी को नहीं पता कि हाफिज का कोई ट्विटर अकाउंट है या नहीं और अगर है तो किस नाम से, लेकिन जैसे ही राजनाथ सिंह ने यह कहा कि जेएनयू में जो कुछ हुआ उसके पीछे लश्कर सरगना का हाथ है, तमाम लोग इस नतीजे पर पहुंच गए कि गृहमंत्री हाफिज के फर्जी ट्विटर अकाउंट को असली समझ बैठे। और जब हाफिज सईद का वीडियो आया तो वही लोग उसे प्रामाणिक ठहराने लगे जो इशरत जहां मामले में डेविड हेडली को झूठा बताने लगे थे। पता नहीं सच क्या है, लेकिन इसमें दो राय नहीं कि जेएनयू में वही नारे लगे जो हाफिज सईद की रैलियों में लगते रहते हैं। जेएनयू में देश विरोधी नारे लगाने वालों का बचाव यह कहकर भी किया गया कि

सरकार को फ्रिंज एलिमेंट यानी मुख्यधारा से अलग तत्वों की परवाह नहीं करनी चाहिए। गौर करें यह तर्क वही दे रहे हैं जो अनाम–गुमनाम से हिंदू संगठनों की हरकतों पर आसमान सिर पर उठा लेते हैं। वे इन संगठनों की पीठ पर मोदी का हाथ भी देख रहे होते हैं। अगर जेएनयू में 'फ्रिंज एलिमेंट' के रूप में कुछ छात्र समूहों को देश विरोधी गतिविधियों की इजाजत मिलनी चाहिए तो फिर ऐसी ही इजाजत अन्य विश्वविद्यालयों–कॉलेजों में क्यों नहीं मिलनी चाहिए?

यह पहली बार नहीं है जब बिना शर्म–संकोच बौद्धिक बेईमानी का परिचय दिया जा रहा हो। ध्यान दें कि जो दादरी की घटना पर उबल पड़े थे और उचित ही उबल पड़े थे वे मूदबिदरी की घटना पर मौन रहे। वे मालदा पर भी बोलने में शरमा गए थे। मालदा की घटना पर तो मीडिया के एक हिस्से को भी सांप सा सूंघ गया था। जो कमलेश तिवारी के मूर्खता भरे बयान पर आग बबूला हो गए थे वे उसके सिर इनाम रखने वाले मौलानाओं के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोल सके। जो साक्षी–साध्वी के बेतुके बयानों पर तैश में आ जाते है वे आजम–ओवैसी–दिग्विजय के ऐसे ही बयानों पर गुमसुम हो जाते हैं। अगर गोडसे का महिमामंडन शर्मनाक है तो अफजल का गुणगान ऐसा ही क्यों नहीं है? जो लोग गुलाम अली का मुंबई में कार्यक्रम न होने पर जार–जार रोते हैं वे एआर रहमान के खिलाफ फतवे पर मुंह खोलने में क्यों घबराते हैं? यदि जेएनयू में अफजल के पोस्टर लहराना 'बच्चों' की 'नादानी' है तो राहुल को काले झंडे दिखाना फासीवाद कैसे है?

जेएनयू में देश विरोधी नारे लगाने वालों के बचाव में एक कुतर्क यह भी पेश किया जा रहा है कि वहां इस तरह का काम पहले भी होता रहा है। जैसे 2010 में छत्तीसगढ़ में 76 सीआरपीएफ जवानों की हत्या पर खुशी जताई जा चुकी है। एक अन्य कुतर्क यह है कि कश्मीर घाटी में भी तो अफजल के समर्थन में नारे लगते हैं। क्या यह कहने की कोशिश हो रही है कि अगर ऐसे ही नारे देश में भी लगें तो भी हर्ज नहीं? जेएनयू में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की पक्षधरता वे तमाम लोग भी कर रहे हैं जिन्होंने इससे अनजान रहना ही बेहतर समझा कि हाल में ही रामदेव को वहां बोलने की इजाजत नहीं दी गई। राजनीति का स्तर गिरता चला जाए तो वह जनदबाव में सुधर सकता है, लेकिन इसमें संदेह है कि बौद्धिक विचार–विमर्श के गिरते स्तर को सुधारने का कोई उपाय है।

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडीटर हैं)

यह लेख दैनिक जागरण में 16 फरवरी 2016 को प्रकाशित है।

छात्रों में राष्ट्र चेतना का भाव होना जरूरी

वाराणसी। छात्रों में राष्ट्र चेतना का विकास होना चाहिए। राष्ट्र को मूल में रखकर किया गया विकास ही व्यक्तित्व का आधार बनता है। मालवीय जी का राष्ट्रवाद वस्तुतः शिक्षा क्षेत्र में दिया गया योगदान है। बीएचयू के छात्र–छात्राओं को महामना के मानवीय मूल्यों को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभानी होगी।

उक्त बातें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ काशी प्रांत के प्रचारक श्री अभय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य पर आयोजित संगोष्ठी में कहीं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की ओर से के. एन. उडुप्पा सभागार में 'महामना का राष्ट्रवाद व देश के शैक्षणिक संस्थानों के विकास में बीएचयू का योगदान' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।

अभाविप के काशी प्रांत के संयोजक पतंजलि पांडेय ने कहा कि वर्तमान समय में शिक्षा की उपयोगिता को इसी बात से समझा जा सकता है कि यह वह हथियार है जिसके बल पर सभी जंग जीते जा सकते हैं। शायद इस विचार के साथ मालवीय जी ने बीएचयू की कल्पना की थी, जो आज भी परिलक्षित दिख रही है।

दूषित मानसिकता का उपचार जरूरी

कन्हैया को सशर्त जमानत देते हुए अदालत ने की सख्त टिप्पणी

नई दिल्ली। जेएनयू प्रकरण में कन्हैया कुमार को हाई कोर्ट ने सशर्त जमानत जरूर दे दी है, लेकिन अपने आदेश में देशविरोधी नारों पर उसने सख्त टिप्पणी की है। न्यायमूर्ति प्रतिभा रानी ने कहा कि इस प्रकार की नारेबाजी करने वाले लोगों की मानसिकता दूषित हो चुकी है और इनका उपचार जरूरी है। न्यायमूर्ति ने कहा कि ऐसी नारेबाजी करने वाले तभी तक स्वतंत्र हैं जब तक देश के सैनिक सीमा पर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं। क्या अफजल गुरु व मकबूल भट्ट के समर्थन में नारेबाजी करने वाले एक घंटे भी दुर्गम क्षेत्र में रह सकते हैं। उनकी नारेबाजी से तिरंगे में लिपटे हुए ताबूत में घर लौटने वाले शहीदों के परिजनों को पीड़ा होती है।

पीठ ने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि संविधान में सभी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है, लेकिन इस स्वतंत्रता के साथ कुछ जिम्मेदारियां भी हैं। अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अदालत ने जेएनयू में देश व सुरक्षा बलों के विरोध में नारेबाजी पर कहा कि ऐसे व्यक्ति विश्वविद्यालय परिसर में आराम और सुरक्षित वातावरण में हैं। वहीं, हमारे जवान सियाचिन में लड़ाई लड़ रहे हैं। वहां ऑक्सीजन इतनी दुर्लभ है कि जो लोग अफजल गुरू और मकबूल भट्ट के पोस्टर पकड़े राष्ट्रविरोधी नारेबाजी कर रहे हैं उनके सीने वहां एक घंटे के लिए स्थिति का सामना करने में सक्षम नहीं हैं।

अदालत ने कहा कि वह इस मामले में फैसला देते हुए खुद को चौराहे पर खड़ी पाती है। याचिकाकर्ता एक

कन्हैया कुमार को जमानत देने के फैसले की शुरुआत न्यायाधीश ने अभिनेता मनोज कुमार की देशभक्ति से प्रेरित फिल्म उपकार के गाने से की।

रंग हरा हरी सिंह नलवे से
रंग लाल है लाल बहादुर से
रंग बना बसंती भगत सिंह
रंग अमन का वीर जवाहर से
मेरे देश की धरती सोना उगले
उगले हीरे मोती, मेरे देश की धरती..

गीत का जिक्र करते हुए न्यायमूर्ति प्रतिभा रानी की पीठ ने कहा कि गीतकार इन्दीवर का यह देशभक्ति गीत मातृभूमि के लिए अलग–अलग रंग और प्यार का प्रतिनिधित्व कर विशेषताओं का प्रतीक है। यह समय है जब इस वसंत के मौसम में प्रकृति में सभी रंग के फूल खिलते हैं। इस वसंत में प्रतिष्ठित जेएनयू जो दिल्ली के दिल में स्थित है वहां क्यों शांति के रंग में भंग पड़ गया। छात्रों, संकाय सदस्यों और इस राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रबंधन को इसका जवाब देने की जरूरत है।

बौद्धिक वर्ग से है और पीएचडी कर रहा है। जेएनयू बुद्धिजीवियों के केंद्र के रूप में जाना जाता है। अदालत ने कहा किसी भी व्यक्ति की राजनीतिक संबद्धता या विचारधारा हो सकती है। उसे आगे बढ़ाने के लिए हर किसी के पास अधिकार है, लेकिन यह केवल संविधान के दायरे में रहते हुए होना चाहिए।

पीठ ने कहा, 'जो राष्ट्रविरोधी संक्रमण की दूषित मानसिकता से पीड़ित हैं ऐसे छात्रों को नियंत्रित किया जाना जरूरी है, ताकि यह एक महामारी न बन जाए। जब संक्रमण एक अंग में फैला हुआ है तो एंटीबायोटिक दवाएं भी काम नहीं करतीं। ऐसे में उपचार की दूसरी पद्धति का पालन करके ही इलाज करने की कोशिश की जानी चाहिए। कभी–कभी शल्य चिकित्सा की जाती है, लेकिन जब अंत हो जाता है तो अंग को काटना भी पड़ता है। अफजल गुरू और मकबूल भट्ट के पोस्टर पकड़े हुए छात्रों को आत्मनिरीक्षण की जरूरत है। अफजल गुरू को हमारी संसद पर हमले का दोषी पाया गया था। उसकी पुण्यतिथि पर नारेबाजी राष्ट्रविरोधी विचारों को जन्म देती है।'

खुल रही षड्यंत्र की परतें...

अफजल की बरसी मनाने की अनुमति नहीं देने से नाराज था कन्हैया

नई दिल्ली। देशद्रोह के आरोप का सामना कर रहे छात्र संघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार नये विवाद में फंस गये हैं। जेएनयू के रजिस्ट्रार भुपिंदर जुत्शी ने दावा किया है कि कन्हैया ने अफजल गुरु की फांसी की बरसी पर विवादित कार्यक्रम की अनुमति रद्द करने पर आपत्ति दर्ज करायी थी। अनुमति रद्द होने के बाद भी नौ फरवरी को कार्यक्रम हुआ और इसमें देश के खिलाफ नारे लगे थे।

कुलपति एम. जगदीश कुमार के निर्देश पर बनी उच्च–अधिकार प्राप्त जांच समिति के सामने जुत्शी ने कहा, 'मैंने नौ फरवरी की दोपहर तीन बजे जेएनएसयू की बैठक बुलायी थी, जिसमें दिव्यांग छात्रों के लिए खरीदी गयी नई बसों के रूट पर चर्चा होनी थी। कन्हैया कुमार और रामा नागा (जेएनयूएसयू महासचिव) बैठक के लिए सबसे पहले तीन बजे पहुंचे, जिसके कुछ समय बाद सौरभ शर्मा (अभाविप सदस्य और जेएनयूएसयू के संयुक्त सचिव) आये। करीब दस मिनट तक बस रूट पर चर्चा हुई। इस दौरान सौरभ शर्मा ने बताया कि कुछ छात्रों ने आज (नौ फरवरी 2016 को) अफजल गुरु की न्यायिक हत्या पर साबरमती ढ़ाबे पर शाम पांच बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया है। और इस बाबत शिकायत भी दर्ज करायी। जिसके बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने मामले पर गौर करते हुए कार्यक्रम की अनुमति रद्द करने का फैसला किया.. इसके बाद कन्हैया कुमार ने मुझे फोन करके अपनी आपत्ति दर्ज करायी।'

आंतरिक दुश्मनों से देश को बचाने की लड़ाई

नई दिल्ली। अद्‌भूत, अनोखा, स्वतःस्फूर्त और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत। शायद ही राष्ट्रीय राजधानी इसके पहले कभी इस तरह के आयोजन का गवाह बनी हो। जब सीमा पर देश की रक्षा करने वाले पूर्व सैनिक देश की एकजुट की अपील के साथ सड़क पर उतरे हों और उनके पीछे जनसैलाब उमड़ पड़ा हो। न कोई राजनीतिक दल, न स्वयंसेवी संस्थाएं... चंद पूर्व सैनिकों के 'पीपुल फॉर नेशन' के आह्‌वान पर हजारों की संख्या में लोग देश की एकता–अखंडता और संप्रभुता के लिए सड़क पर उतरें। राजघाट से लेकर संसद मार्ग तक पूरा क्षेत्र तिरंगे झंडे से पट गया। पूर्व सैन्य अधिकारियों द्वारा निकाली गयी 'पीपल मार्च फॉर यूनिटी' रैली ने दर्शा दिया कि देश में मुट्ठीभर देशद्रोहियों के मुकाबले राष्ट्रवादियों, देशभक्तों की संख्या बहुत ज्यादा है।

इस मार्च के आयोजक सेवानिवृत्त मेजर जनरल ध्रुव सिंह कटोच ने संसद मार्ग में जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि देश के अन्दर कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने भाषणों में देश को तोड़ने की बात कहते हैं। उन लोगों के लिए हमारा जवाब साफ है, 'हम देश को जोड़ेंगे और जोड़ते रहेंगे।' उन्होंने कहा कि देश को बाहरी दुश्मनों से बचाने की जुगत हमने कर ली, अब हम आंतरिक दुश्मनों से लड़ेंगे।

मेजर जनरल चक्रवर्ती ने कहा कि जो बात–बात पर देश के अपमान की बात करते हैं और हर क्षण टुकड़े–टुकड़े करने की बात करते हैं शायद वो भूल रहे हैं कि यह देश सुभाष चन्द्र बोस, शिवाजी, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, तात्या टोपे, महाराणा प्रताप, रानी लक्ष्मी बाई जैसे वीर–वीरांगनाओं का देश है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था, 'इस देश का मान–सम्मान और गौरव भारतीय तिरंगा है। जो कभी झुका नहीं है, इसलिए हम सभी देशवासियों का कर्तव्य है कि इसके सम्मान पर कोई आंच न आने दें।

राष्ट्र की एकता–अखंडता को सर्वोपरी बताते हुए एयर मार्शल पी. के. रॉय ने कहा कि जब राष्ट्र है तभी विचार की अभिव्यक्ति हो सकती। जब राष्ट्र ही नहीं रहेगा तो किसी भी अभिव्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। हमारे लोकतंत्र में ही बस लोगों को अभिव्यक्ति की आजादी दी गयी है जबकि दुनिया के कई देशों में यह अब भी कल्पना भर है।

मेजर जनरल राज मल्होत्रा (सेवानिवृत्त) ने कहा कि जिस देश को विदेशी ताकतों से बचाने के लिए सेना जान की बाजी लगा देती है। उसको बर्बाद करने की बात हो रही है। जिस तिरंगे को लहराने पर लोगों को एतराज है, उसे फहराने के लिए कितने सैनिकों ने शहादत दी है। ऐसे में यह देश की मांग है कि हम अपना कर्तव्य निभाएं।

बेहतर नागरिक बनाने वाली शिक्षा नीति की जरूरत

बीएचयू में आयोजित हुआ केन्द्रीय विश्वविद्यालय का सम्मेलन

कार्यक्रम में संबोधन करते नीति आयोग के सदस्य व अर्थशास्त्री बिबेक देबराय

वाराणसी। आजादी के बाद देश की शिक्षा नीति में कई बदलाव हुए, कई समितियों की सिफारिशों पर सरकारों ने अमल किये, बड़ी संख्या में शिक्षण संस्थान भी खुले, सरकार ने विभिन्न तरह की योजनायें भी चलायी लेकिन वह भारत केन्द्रित व भारतीय समाज की जरूरतों को ध्यान में रखकर नहीं बन पायी। इस वजह से देश की समस्याएं समय के साथ नई–नई चुनौतियों के रूप में बढ़ती गयी। भारत को एक ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता है जो यहां के मूल्यों की रक्षा करने के साथ लोगों की जरूरतों और अपेक्षाओं पर भी खरी उतरे।

उक्त बातें अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. नागेश ठाकुर ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में आयोजित केन्द्रीय विश्वविद्यालय सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में कही। शताब्दी वर्ष समारोह के अंतर्गत अर्थशास्त्र विभाग व विद्यार्थी निधि के संयुक्त तत्वावधान में "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिक भारत और उभरते हुए वैश्विक परिदृश्यः पुराने मुद्दें और नयी चुनौतियां" विषय पर आयोजित इस दो दिवसीय सम्मेलन में देशभर से आये प्रतिनिधियों का जेएनयू की हालिया घटना की तरफ ध्यान आकर्षित करते हुए डॉ ठाकुर ने कहा कि पिछले 68 वर्षों में हमारी शिक्षा व्यवस्था कहां पहुंच गयी कि देश के श्रेष्ठ विश्वविद्यालय में शुमार परिसर में विद्यार्थी भारत को गाली देने से नहीं हिचकते। इतना ही नहीं प्रोफेसरों व बुद्धिजीवियों का एक वर्ग उनके पक्ष में बहस भी कर रहा है। उन्होंने कहा कि देश में सभी बड़े भ्रष्टाचार की जड़ अधिक पढ़े लिखे लोगों से ही जाकर जुड़ती है।

नयी शिक्षा नीति को देश की जरूरत बताते हुए डॉ. नागेश ठाकुर ने कहा कि नालंदा, विक्रमशिला, तक्षशिला विश्वविद्यालय के गौरवपूर्ण इतिहास रखने वाले भारत से दुनिया को बहुत अपेक्षाएं है। दुनियाभर के देश चाहते हैं कि भारत विश्व समुदाय की समस्याओं का समाधान ढूंढने में आगे बढ़कर पहल करें। इसलिए ऐसे समय में, जबकि समावेशी विकास का भारतीय मॉडल विश्व की समस्त आर्थिक व सामाजिक समस्याओं के हल खोजने में मददगार साबित हो सकता है, भारत इसके लिए पूरी तरह तैयार नही दिखता। आवश्यकता है, हम इस दिशा में काम करें ताकि न केवल देश के विश्वविद्यालय विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाये बल्कि एक बेहतर नागरिक भी बनाने में मदद करें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन प्रो. आर. आर. झा ने कहा कि भारतीय संविधान निर्माताओं ने संविधान बनाते समय विश्व के कई देशों की अच्छी बातें समाहित की, लेकिन सभ्यता व संस्कृति का भी ध्यान रखा। हम सभी चाहते है कि भारत आगे बढ़े लेकिन यह तभी होगा जब हमारी सोच आगे बढ़ने की हो व उसमें राष्ट्रीय एकीकरण का भाव हो।

सम्मेलन के दौरान कई समानांतर सत्र भी आयोजित हुए, जिनमें शिक्षा व्यवस्था और आधुनिक समाज, ग्रामीण–शहरी जीवन, उपनिवेशवाद राष्ट्रवाद और भारतीय समाज आदि विषय शामिल रहे। वहीं, प्रो. ए. पी. पाण्डेय और प्रो. आर वी. सिंह ने समाज में शिक्षा की भूमिका को भी विस्तृत रूप से रेखांकित किया।

जेएनयू को भारत विरोधी अड्डा बनाते रहे हैं वामपंथी

✍ मनीष कुमार

यह 29 अप्रैल 2000 की घटना है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में उस वक्त भी एक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ था। इसका आयोजन वामपंथी संगठन के छात्र–नेताओं ने किया था जो सीपीएम की छात्र विंग स्टूडेंट फेडेरेशन ऑफ इंडिया के कार्यकर्ता थे। इसके आयोजन में विश्वविद्यालय ने भी आर्थिक सहयोग किया था। इस कार्यक्रम का नाम था "इंडिया–पाकिस्तान मुशायरा"। इसमें भारत और पाकिस्तान के शायर शामिल थे। यह कार्यक्रम एक खुली जगह पर हो रहा था। गंगा ढाबा के पास केसी मार्केट के पीछे एक ओपन एयर थियेटर में। कोई भी जाकर मुशायरे का आनंद उठा सकता था। जेएनयू के छात्रों के साथ साथ कुछ लोग बाहर से भी आए हुए थे। उस जमाने में बाहरी लोगों के आने जाने पर पाबंदी नहीं थी।

लोग मुशायरे का लुफ्त उठा रहे थे। लेकिन अचानक वहां हंगामा मच गया। पाकिस्तान से आए एक शायर ने कुछ भारत–विरोधी बातें कह दी। कुछ लोगों ने विरोध किया। विरोध करने वालों में बाहर से आए दो शख्स सबसे मुखर थे। इन दोनों को वामपंथी छात्रों ने घेर लिया। दोनों छात्रों के बीच फंसे थे। छात्रों ने पूछा कौन हो तुम लोग। कहां से आये हो। दोनों से जवाब मिला कि दोनों आर्मी के मेजर हैं और कारगिल में पाकिस्तानियों से लड़कर छुट्टी बिताने दिल्ली आए हैं। दोंनो ने अपने आईकार्ड निकाल कर छात्रों को दिखाए। उन्होंने ये भी कहा– हम पाकिस्तानियों के मुंह से भारत की बुराई नहीं सुन सकते हैं। उनको लगा होगा कि शायद आर्मी का नाम सुन कर छात्र कुछ नहीं बोलेंगे। लेकिन, छात्रों की टोली से किसी ने कहा– मारो मारो। ये आर्मी वाला है। फौरन कुछ छात्रों ने पीछे से दोनों पर हमला कर दिया। दोनों जमीन पर गिर गए। फिर उठकर एक ने अपना रिवाल्वर निकाल लिया और छात्रों को पीछे जाने को कहा। वो सिर्फ रिवाल्वर दिखा रहे थे। गोली नहीं चलाई। उन्हें लगा कि छात्र पीछे हट जाएंगे और वो सुरक्षित वहां से निकल जाएंगे। लेकिन इस बीच कुछ छात्रों ने पीछे से पत्थर चलाना शुरू कर दिया। दोनों लहुलुहान हो गए। दोनों नीचे गिर गए। फिर क्या था। छात्रों ने बहुत ही बेदर्दी से दोनों की पिटाई की। जब तक दोनों अधमरे नहीं हो गए। तब तक वामपंथी छात्र उनकी पिटाई करते रहे। दोनों के कपड़े फाड़ कर उनके गुप्तागों पर भी वहशियाना हमला किया। जब ऐसा लगा कि दोनों मर गए तब ये छात्र वहां से निकले।

विश्वविद्यालय की सिक्योरिटी की सूचना पर पुलिस आई और कारगिल के दो हीरो के अधमरे शरीर को अपनी गाड़ी में लाद कर ले गए। इस बीच एक बात और हुई। एक टीवी चौनल का रिपोर्टर और कैमरामैन भी वहां मौजूद था। कैमरामैन ने इस पूरी घटना को अपने कैमरे में कैद कर लिया। दोनो वहां से गंगा ढाबा पहुंच कर चाय पी रहे थे कि छात्रों का वही गिरोह वापस गंगा ढाबा पहुच कर दोनों को घेर लिया। जबरदस्ती उनसे टेप छीने और उन्हें कैम्पस से बाहर जाने को कहा। दोनों ने काफी मिन्नतें की लेकिन उन्हें टेप नहीं मिली। रात में पता चला कि दोनों आर्मी आफिसर आईसीयू में भर्ती हैं। उनकी हालत खराब है। शायद एक की मौत हो जाए।

सवेरे हिंदू अखबार में यह खबर छपी कि दो लोगों ने जेएनयू में घुस कर "इंडिया–पाकिस्तान मुशायरा" में विघ्न डालने की कोशिश की। साथ में वामपंथी संगठन के आयोजकों की तरफ से अखबार ने बताया कि "इंडिया–पाकिस्तान मुशायरा" को असफल बनाने के लिए दोनों को उप–प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने भेजा था। मजेदार बात यह है कि इस तरह के बकवास को द हिंदू जैसे अखबार ने छाप भी दिया। इससे हुआ ये कि पाकिस्तान की मीडिया ने भी यही छापा। पाकिस्तान की मीडिया ने भारत सरकार पर यह आरोप लगाया कि योजनाबद्ध तरीके से आडवाणी ने "इंडिया–पाकिस्तान मुशायरा" को बाधित किया।

पूरे जेएनयू कैम्पस में इस घटना को लेकर तनाव रहा। जब पता चला कि कारगिल युद्ध के दो जाबांजों के साथ वामपंथी छात्रों ने यह काम किया है तो कैम्पस में तनाव बढ़ गया। विद्यार्थी परिषद ने घटना के अगले दिन एक बडा जुलूस निकाला। एक दिन बाद सारे अखबारों में सही कहानी आई। तब दुनिया ने जाना कि जेएनयू में दो जांबाज आर्मी ऑफिसर के साथ क्या हुआ था। उस दौरान संसद का सत्र चल रहा था। संसद में यह मामला उठा। मेजर जनरल खंडूरी, राजीव प्रताप रूढ़ी और साहेब सिंह वर्मा ने संसद में इस मामले की जांच की मांग की। संसद में जब यह आरोप लगाए जा रहे थे कि जेएनयू के अंदर राष्ट्रविरोधी तत्वों पर लगाम लगाना जरूरी है तब लोकसभा में सोनिया गांधी के साथ साथ सभी वामपंथी नेता मौजूद थे लेकिन किसी ने भी कुछ नहीं कहा। इस बीच खबर आई कि दोनों की तबीयत बिगड़ रही है तो तत्कालीन रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीस उनसे मिलने अस्पताल पहुंचे।

इसके बाद जेएनयू में वामपंथियों को लगा कि मामला बिगड़ रहा है तो विश्वविद्यालय के वामपंथी प्रोफेसर हमलावर छात्रों के समर्थन में आ गए। उनकी तरफ से एक पर्चा भी बांटा गया। जिसमें बताया गया कि पाकिस्तानी शायर ने कोई गलत बात नहीं कही और दूसरा यह कि वामपंथी छात्रों की कोई गलती नहीं है क्योंकि दोनों आर्मी आफिसर ने शराब पी रखी थी और बिना अनुमति के कैम्पस में घुस कर हंगामा किया। अगले दो तीन दिन तक हर अखबार में खबरें छपी। अखबारों में बड़े बड़े संपादक ने संपादकीय लिखा। पुलिस ने एफआईआर दाखिल की। उस वक्त लौहपुरुष आडवाणी ने भी कोई एक्शन नहीं लिया क्योंकि उन्हें लगा कि अगर वो छात्रों के खिलाफ कोई कार्रवाई करते हैं तो मीडिया और बुद्धिजीवी वर्ग सरकार के विरोध में लामबंद हो जाएंगे। इसी डर से इस केस में आजतक न कोई गिरफ्तार हुआ और न ही किसी को सजा मिली। इस घटना को मैं इसलिए बता रहा हूं क्योंकि जवाहरलाल नेहरू युनिवर्सिटी फिर से विवाद में है। पहली बार कम्यूनिस्टों की हकीकत सामने आई है क्योंकि भारत–विरोधी नारेबाजी और भाषणबाजी का वीडियो सामने आ गया। वैसे, जेएनयू में भारत–विरोधी नारे कई सालों से लग रहे हैं। वामपंथी संगठन भारत के टुकड़े टुकड़े करने की बात करते रहे हैं। भारतीय सेना को भला–बुरा कहना यहां आम बात है। यह कोई नई बात नहीं है। अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर इस कैम्पस में आंतकवादियों और कश्मीरी अलगाववादियों को बुलाकर प्लेटफार्म दिया जाता रहा है। इससे पहले भी आजम इंकलाबी के आने पर जेएनयू में हंगामा हुआ था। सबसे दुखद बात यह है कि भारत–विरोधी गतिविधियों को जेएनयू के वामपंथी प्रोफसरों का भरपूर समर्थन मिलता है। सच्चाई ये है जेएनयू में देशभक्ति को अवगुण माना जाता है।

हाल की घटना के दो दिन बाद तक हर वामपंथी संगठन बचाव में दलील दे रहे थे जेएनयू में अभिव्यक्ति की आजादी है।। छात्रों के विचारों को कुचला नहीं जा सकता है।। दो दिन तक किसी ने एक बार भी पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे की निंदा नहीं की। किसी ने ये भी नहीं कहा कि ये वामपंथी छात्र नहीं हैं। लेकिन पुलिस की कार्रवाई के बाद इनकी अकल ठिकाने आई है। अब ये भारत–विरोधी नारेबाजी की निंदा करते नजर आ रहे हैं। इसकी वजह यह नहीं कि उनका हृदय–परिवर्तन हुआ है बल्कि जिस तरह से वे रंगे हाथ पकड़े गए हैं और देश भर में इनकी थू–थू हो रही है उसमें बचने का कोई रास्ता नहीं बचा है। वर्ना ये फिर झूठ बोलकर खुद को पाक–साफ साबित करने की कोशिश करते। जैसा कि एक फर्जी वीडियो को दिखा कर यह भ्रम फैलाने की कोशिश हो रही है कि पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा देने वाले बाहरी लोग थे या परिषद के लोग थे। लेकिन, आज के इस जमाने में इस तरह की घटिया–कलाबाजी ज्यादा देर तक टिक नहीं सकती है। दरअसल, लोगों को भ्रमितकर राजनीति चमकाना इनकी पुरानी आदत है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

यह लेख मनीष कुमार के फेसबुक पोस्ट से लिया गया है।

हमें चाहिए आजादी...

शिक्षा जगत को अराजकता और आतंक का अखाड़ा बनाने वाले चन्द वामपंथी छात्र संगठनों ने देश की चिंता को बढ़ा दिया है। अकादमिक क्षेत्र में वर्षों से विचारधारा के नाम पर कुण्डली मारकर बैठे मुट्ठीभर लोग आये दिन भारत की बर्बादी और कश्मीर की आजादी के नाम पर अपनी दुकान चला रहे हैं। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) ही नहीं कई और भी ऐसे शैक्षणिक संस्थान हैं जो इस तरह की गतिविधियों में संलिप्त छात्र संगठनों का खुलकर समर्थन करते हैं। जेएनयू की घटना कोई नयी बात नहीं है, यहां इससे पहले भी राष्ट्रविरोध में नारे बुलंद हुए हैं। लेकिन अब छात्र चुप बैठने वाले नहीं हैं, इन छद्म वामपंथियों के खिलाफ जेएनयू के छात्र खुलकर लोकतांत्रिक तरीके से विरोध जता रहे हैं। इस मसले पर छात्रशक्ति संवाददाता अवनीश राजपूत ने जेएनयू व दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों से बातचीत की। प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश–

जेएनयू में देश विरोधी गतिविधियों को राजनीतिक प्रश्रय मिला हुआ है। घटना के बाद राहुल गांधी, अरविंद केजरीवाल, डी. राजा, सीताराम येचुरी व वृंदा करात जैसे नेताओं का आरोपी छात्रों के पक्ष में खड़े होना इस बात की पुष्टि करता है। इन नेताओं से पूछना चाहिए कि आप देश के लिए मर मिटने वाले शहीद जवानों के सम्मान में खड़े होंगे कि आतंकी अफजल के लिए।

–आलोक, छात्र, जेएनयू

देशद्रोही गतिविधियों को वहां के अध्यापकों और प्रशासकों का पूरा समर्थन मिला हुआ है। आरोपी उमर खालिद समेत अन्य छात्र कहीं बाहर नहीं थे, वे सभी जेएनयू के भीतर ही अध्यापकों के घर में छुपे हुए थे। बीते दिन जब वामपंथी छात्रों ने आरोपियों के समर्थन में मार्च निकाला था तो विश्वविद्यालय में योजनाबद्ध तरीके से अवकाश कर दिया गया ताकि मार्च में छात्रों की भीड़ दिखे।

–रोहित, छात्र, जेएनयू

जेएनयू में कुछ विद्यार्थी देश को बांटने की बात कर रहे हैं तो कुछ आतंकी अफजल के समर्थन में नारे लगा रहे हैं। अभिव्यक्ति के नाम पर इस तरह की देश विरोधी गतिविधियों को खुलेआम परिसर में चलाया जा रहा है और विश्वविद्यालय प्रशासन चुप्पी साधे हुए है। यह बहुत ही शर्मनाक वाकया है। इसीलिए इसके विरोध में आम छात्रों को सड़कों पर निकलना पड़ा।

–प्रज्ञा मलिक, छात्रा, जाकिर हुसैन कॉलेज

कन्हैया कहता है कि वह देश विरोधी नारा लगाने वालों में शामिल नहीं था, जबकि हकीकत यह है कि उस दिन वह खुलेआम इस गतिविधि में शामिल था। देश के टुकड़े करने वालों से मैं पूछना चाहती हूं कि वो किस टुकड़े में रहना पसंद करेंगे। धीरे–धीरे अब इनके चेहरे बेनकाब हो चुके हैं। आइसा, डीएसयू, एसएफआई जैसे संगठन देशद्रोह के काम में लगे हुए हैं, इन पर ठोस कार्रवाई हो।

–जिम्मी, छात्र, जेएनयू

यह किसी को अधिकार नहीं है कि वह भारत माता को गाली दे। बोलने की आजादी का यह मतलब भारत की बर्बादी तक जंग... यह कत्तई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। जेएनयू सहित कई कैम्पसों में ये वामपंथी छात्र संगठन इस देश को तोड़ने की कोशिश में जुटे हुए हैं। ऐसे संगठनों की पहचान कर उन्हें प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

–प्रिया शर्मा, छात्रा, दौलतराम कॉलेज

जेएनयू में अगर आप राष्ट्रीयता की बातें करते हैं या किसी महापुरुष के बारे में विचार रखते हैं तो आपको हाशिये पर डाल दिया जाता है। इतना ही नहीं अगर आप भारत माता की जय के नारे लगाते हैं तो आपको संघी करार दिया जाता है और झूठा आरोप लगाकर बदनाम किया जाता है।

–साक्षी भारद्वाज, छात्रा, जेएनयू

जेएनयू में छात्रों का ब्रेनवाश किया जाता है। छात्रों को नक्सली और आतंकी साहित्य पढ़ने को दिया जाता है। धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाले पोस्टर और स्लोगन यहां की दीवारों पर आये दिन देखे जा सकते हैं। इतना ही नहीं यहां ऐसी स्थिति है कि कोई वंदेमातरम कहता है तो उसे अपराधी की नजर से देखा जाता है।

–वैलेंटीना ब्रह्मा, छात्रा, जेएनयू

जेएनयू की आवाज नहीं है कन्हैया

कन्हैया से अलग है जेएनयू की राय, छात्रों ने देशविरोधी नारों को बताया कन्हैया की निजी सोच

नई दिल्ली। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) कैंपस में रहने वाले शिक्षकों और छात्रों का मानना है कि देशद्रोह के आरोपी और अंतरिम जमानत पर रिहा होकर कैंपस लौटे छात्र संघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार ने अपने पहले ही भाषण में जो बातें कहीं, उसे जेएनयू की आवाज कहना उचित नहीं होगा। उनका कहना है कि वामपंथी विचारधारा के समर्थक कुछ पूर्व व वर्तमान छात्रों और शिक्षकों को छोड़ दें तो कैंपस में हो रहे हंगामे से सभी शिक्षक व छात्र तंग आ चुके हैं। उनका कहना है कि मोदी सरकार के खिलाफ देश की 69 फीसद जनता होने की बात करने वाले कन्हैया को समझना चाहिए कि उन्हें भी कैंपस के करीब 7500 मतदाताओं में से 1029 ने ही अध्यक्ष के तौर पर स्वीकार किया है। यानी करीब 86 फीसद छात्र उनसे अलग थे। ऐसे में वह अपनी आवाज को जेएनयू की आवाज न बताएं तो बेहतर होगा।

सेंटर फॉर लॉ एंड गवर्नेंस की प्रोफेसर अमिता सिंह कहती हैं कि कन्हैया को इसी आशा में राहत दी गई है कि वह कैंपस में छात्र संघ अध्यक्ष की जिम्मेदारी का निर्वहन करेंगे, लेकिन उनके तेवर देखकर ऐसा नहीं लग रहा है। अमिता कहती हैं कि जहां तक समर्थन की बात है तो पहले दिन से ही उन्हें उन वामपंथी विचारधारा के छात्रों व शिक्षकों का समर्थन प्राप्त है, जो संसद पर हमले के दोषी अफजल गुरू व मकबूल बट की फांसी के खिलाफ हैं। जिस तरह से कुछ छात्र उमर व अनिर्बान की रिहाई की तख्ती लिए कन्हैया की सभा में नजर आए, उससे तो यही प्रतीत होता है कि दिशा जरूर बदली है लेकिन सोच वहीं की वहीं है।

स्कूल ऑफ कंप्यूटर एंड सिस्टम साइंस के प्रोफेसर बुद्ध सिंह कहते हैं कि कुछ वामपंथी विचारधारा के

समर्थक शिक्षकों की प्रयोगशाला में गरीब छात्र हथियार बन रहे हैं। कन्हैया इसका ताजा उदाहरण है। छात्र इस हद तक इन शिक्षकों के हाथ की कठपुतली बन गए हैं कि उन्हें सही–गलत का फर्क समझ में नहीं आ रहा है। जब अदालत का फैसला उनके पक्ष में हो तो उन्हें न्यायपालिका पर भरोसा होता है, लेकिन जब फैसला उनके खिलाफ हो तो वो जुडीशियल किलिंग बताया जाता है। यदि स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज को छोड़ दिया जाए तो कैंपस में छात्र व शिक्षक वामपंथियों के इस हंगामे से तंग आ चुके हैं। वह चाहते हैं कि अब कैंपस में देशविरोधी गतिविधियों पर अंकुश लगे।

स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज में पीएचडी के छात्र उमेश कुमार कहते हैं कि उन्हें न वामपंथ से कुछ लेना–देना है और न ही दक्षिणपंथ से। कैंपस में अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर हो रही अति पर अंकुश लगना चाहिए। जिस तरह से विगत 9 फरवरी को मकबूल व अफजल का शहीद दिवस कार्यक्रम आयोजित हुआ और उसमें कन्हैया शामिल हुए, उससे साफ हो जाता है कि वह किस आजादी के पक्षधर हैं।

अब कन्हैया किसान के लिए गरीबी और मनुवाद से आजादी की मांग कर रहे हैं लेकिन क्या अफजल और मकबूल खेती करते थे जो वह उनके पक्ष में आयोजित कार्यक्रम में उमर खालिद के बगल में खड़े नजर आ रहे थे।

देश विरोधी नारे लगना आतंकी हमले की सोच जैसा खतरनाक

नई दिल्ली। जेएनयू में राष्ट्रविरोधी नारे लगाने वाले युवा... किसी भी हालत में संसद और पठानकोट हमले के साजिशकर्ता आतंकी अजहर मसूद से कम खतरनाक नहीं हैं। ऐसे लोगों से देश को बचाने की जद्दोजहद में जरूरी है कि लोग जागरूक हों और देश व समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों की समझें।

उक्त बातें देशवासियों को तथाकथित लोगों जो अफजल की फांसी और देश के संविधान पर उंगलियां उठा रहे हैं.. से सावधान रहने की अपील करते हुए बुद्धिजीवियों ने कहीं। सिनेमा, कला, लेखन से जुड़े इन बुद्धिजीवियों के अनुसार संसद हमले के आरोपी अफजल गुरु की सराहना शर्मनाक और चिंताजनक है। साथ ही यह देश की संप्रभुता, सुप्रीम कोर्ट, राष्ट्रपति और संसद का अपमान भी है। आम जनता से अपील जारी करने वालों में फिल्म कलाकार अनुपम खेर, परेश रावल, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एन गोपालस्वामी, साहित्यकार नरेंद्र कोहली, गायक उदित नारायण, गीतकार प्रसून जोशी, अर्थशास्त्री बिबेक देबराय, शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी, गायक छन्नुलाल मिश्र, पंडित राजन–साजन मिश्र, लोक गायिका मालिनी अवस्थी, साहित्यकार चित्रा मुद्गल, पत्रकार रजत शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार रामबहादुर राय, जवाहर लाल कौल, स्वप्न दासगुप्ता सहित 33 लोग शामिल हैं।

बुद्धिजीवियों ने आरोप लगाया कि देश विरोधी ताकतों ने लोगों को भड़काने के लिए जेएनयू में यह साजिश रची गयी ताकि लोग भड़कें और इसे देशव्यापी राजनीतिक ध्रुवीकरण का स्वरूप दिया जाए। साजिश रचने वालों को यह मालूम है कि सरकार ऐसे में कार्रवाई जरूर करेगी और बाद में इसे सरकारी दमन और आपातकाल से बुरा घोषित कर सरकार के खिलाफ माहौल बनाया जाएगा। इनका कहना है कि शैक्षिक परिसरों में राष्ट्रविरोधी नारों ने हमारी चेतना को झकझोर दिया है। राष्ट्रविरोधी नारे लगाने वालों के खिलाफ राष्ट्रद्रोह के तहत केस दर्ज कर कार्रवाई करने का समर्थन करते हुए अपील में लिखा गया है कि 'राष्ट्रविरोधी ताकतों की यह सोची समझी साजिश है और जो इस तरह के नारे लगाते हैं, वे सोच के स्तर पर आतंकवादी मौलाना मसूद अजहर से जरा भी कम खतरनाक नहीं हैं।'

जेएनयू की घटना के पीछे छिपे हुए खतरे की ओर इशारा करते हुए कहा गया कि हम सरकार के खिलाफ वैचारिक असहमति का स्वागत करते हैं, लेकिन देश के खिलाफ इस तरह की नारेबाजी अस्वीकार्य है। अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर इस तरह की घटना को छिपाने की कोशिश हो रही है। हिंसा को किसी भी स्तर पर सही नहीं ठहराया जा सकता.. के बयान के साथ बुद्धिजीवियों ने पटियाला हाउस कोर्ट में वकीलों द्वारा कन्हैया पर किये गये हमले की भी निंदा की। आम जनता से इस साजिश से सावधान रहने की अपील करते हुए बुद्धिजीवियों ने कहा कि पहले असहिष्णुता को लेकर माहौल बनाने की कोशिश हुई, फिर दलित छात्र उत्पीड़न का माहौल बनाया गया। जब यह सब नहीं चला तो अब वैचारिक आजादी की आड़ में देश विरोधी नारेबाजी की जा रही है।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से उठते सवाल

✍ उमेश चतुर्वेदी

राजधानी दिल्ली में लाल दुर्ग के तौर पर विख्यात जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की हालिया घटनाओं पर सियासी हंगामें ने देश का ध्यान पहली बार अपनी ओर आकर्षित किया है। संभवतः यह पहला मौका है, जब अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में लगे देशविरोधी नारे विश्वविद्यालय की चारदीवारी के बाहर ठोस सबूतों के सामने आए हैं। हकीकत तो यही है कि विचारों के लोकतंत्र के नाम पर ऐसा काफी पहले से होता रहा है। चूंकि इस बार ठोस सबूतों के लिए कुछ लोगों ने तैयारी की और इसकी वीडियो रिकॉर्डिंग की, इसलिए लाल दुर्ग की यह कड़वी हकीकत दुनिया में के सामने आई है। यह बात और है कि कभी इसी विश्वविद्यालय की चारदीवारी से राजनीति की दुनिया में कदम रखने वाले मार्कसवादी कम्युनिस्ट पार्टी के मौजूदा महासचिव सीताराम येचुरी इस वीडियो पर ही सवाल उठा रहे हैं। सवाल तो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव डी. राजा और मार्कसवादी कम्युनिस्ट पार्टी के पूर्व महासचिव प्रकाश करात भी उठा रहे हैं। खबरों की दुनिया में एक कहावत कही जाती है कि तस्वीरें कभी झूठ नहीं बोलती। इन तस्वीरों को गलत बताने की चाहे जितनी भी कोशिश की जा रही हो, लेकिन येचुरी, करात और डी राजा के सामने यह कहावत ही संकट बन कर खड़ी हो गई है। उनकी अपीलों को विश्वविद्यालय की चारदीवारी के भीतर भले ही समर्थन मिल रहा हो, लेकिन जिस मुनिरका, बेरसराय और किशनगढ़ के पुश्तैनी गांवों पर जवाहर लाल नेहरू विशविद्यालय बना है, उनमें उनकी अपीलों और दलीलों का असर नहीं हो रहा है। इन गांवों में विशविद्यालय में लगे देश विरोधी नारों को लेकर जिस तरह से उबाल उठा है, उससे भारतीय वामपंथी राजनीति की सीमाएं भी उजागर हुई है। इस गुस्से ने साफ किया है कि भारतीय वामपंथी राजनीति किस कदर स्थानीय सोच और संस्कृति से दूर रही है।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर अतीत में कई ऐसे काम हुए हैं, जिन्हें इस विश्वविद्यालय की चारदीवारी के बाहर शायद ही मान्यता दी जाती। 2004 में चीन ने अपने नक्शें पर अरूणाचल प्रदेश को भारत से अलग चीन का हिस्सा बता दिया था। उस वक्त जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्रसंघ में चुने हुए कुछ काउंसलर ने इसके खिलाफ संकल्प पेश किया था। इस संकल्प में चीन की साम्राज्यवादी नीति के खिलाफ भी प्रस्ताव रखा गया। अव्वल तो देश समर्थक यह संकल्प अगर कहीं रखा जाता तो उसका शायद ही कोई विरोध करता। लेकिन जवाहर लाल नेहरू छात्रसंघ में इसका जोरदार विरोध हुआ और यह प्रस्ताव गिर गया। उल्टे ऑफ द रिकॉर्ड चीन के कदम को सही ठहराया गया। इसी तरह कश्मीर में विदेशी दखल के खिलाफ भी संकल्प पेश किया गया तो उसका भी जोरदार विरोध किया गया और उसे भी पारित नहीं होने दिया गया। 2010 के जून में जब छतीसगढ़ के दंतेवाड़ा में सीआरपीएफ के 76 जवानों को घात लगाकर नक्सलियों ने मार गिराया, तब भी इसी विश्वविद्यालय में इसे भारतीय साम्राज्यवाद के खिलाफ नक्सलवाद की जीत के तौर पर शौर्य दिवस के तौर पर मनाया गया। तब ऐसा करते वक्त इस विश्वविद्यालय के शौर्य दिवस मनाने वाले कार्यकर्ता भूल गए कि मारे गए ज्यादातर सिपाही उसी तबके से आते हैं, जो मजलूम है और जिंदगी की जरूरतों को पूरा करने के लिए नौकरियां करने को मजबूर हैं। दो वक्त की रोटी का उसका भी संघर्ष उतना ही कठिन है, जितना उन दलितों और आदिवासियों के लिए है, जिसके पक्ष में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के बौद्धिक कहे जाने वाले छात्र

नक्सलवाद का समर्थन करते रहे हैं। सवाल यह कि क्या जिस वाम विचारधारा के छात्रों ने समय–समय पर ऐसे कदम विश्वविद्यालय की सीमा में उठाए हैं, क्या क्या उनके ही नेताओं के हाथ केंद्र या छतीसगढ़ राज्य की सत्ता आ जाए तो वे क्या कश्मीर को आजाद हो जाने देगें...क्या नक्सलियों को खून बहाने की अनुमति देते रहेगें... सिंगूर और नंदीग्राम में तो सीपीएम की अगुवाई वाली बुद्धदेव दास गुप्ता की पश्चिम बंगाल सरकार ने नक्सलियों के खिलाफ वैसे ही कदम उठाए थे, जैसे वाम विचार विरोधी दलों की सरकारे उठाते रही है। जब इन संदर्भों में जेएनयू के अंदर होने वाले कार्यो की परख और मीमांसा की जाती है तो निश्चित तौर पर राजनीतिक संदेह बढ़ते हैं और उन संदेहों की सूई एक ही तरफ बढ़ती है।

लोकतांत्रिक नवाचार के नाम पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की सीमा के अंदर यूटोपियाई अंदाज में काम होते रहे हैं, सोच भी यूटोपियाई होती रही है। इस विश्वविद्यालय मे वह सब कुछ होता है, जिसे कम से कम देश के समाज और संस्कृति में सर्वमान्य मान्यता नहीं है। बहरहाल मौजूदा विवाद बेशक वाम विरोधी खेमों की तैयारी के बाद दुनिया के सामने आया है। लेकिन इसका कुछ पक्ष ऐसा भी है। जिसकी जानकारी अभी पूरी दुनिया को नहीं है। नौ फरवरी 2013 को अफजल गुरू को फांसी पर कांग्रेस सरकार ने लटकाया था। तब केंद्र में मनमोहन सिंह की सरकार थी और सुशील कुमार शिंदे गृहमंत्री थे। अफजल गुरू के साथ नाइंसाफी को लेकर तभी से जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में डीएसयू नामकछात्र संगठन अफजल गुरू की याद में विश्वविद्यालय कार्यक्रम करता रहा है। दिलचस्प बात यह है कि यह संगठन जेएनयू में प्रतिबंधित है। इतना ही दिलचस्प यह भी जानना होगा कि इस कार्यक्रम के लिए डीन ऑफ स्टूडेंट वेलफेयर से अनुमति सांस्कृतिक कार्यक्रम के तौर पर ली जाती रही है। प्रतिबंधित होने के बावजूर इस बार दो फरवरी को ही इस संगठन ने विश्वविद्यालय में कार्यक्रम को लेकर पर्चा दाखिल किया। नौ फरवरी को कार्यक्रम करने के लिए उसकी तरफ से विश्वविद्यालय प्रशासन से अनुमति मांगी। अनुमति को लेकर विश्वविद्यालय में दो तरह के विचार है। डीन ऑफ स्टूडेंट वेलफेयर का कहना है कि उन्होंने अनुमति नहीं दी तो एसोसिएट डीन का कहना है कि उन्होंने अनुमति दी। फिर सवाल यह है कि प्रतिबंधित होने के बावजूद डीएसयू पर्चे बांटने और उसमें अपने पदाधिकारियों का नाम और फोन नंबर देने में कामयाब कैसे हुआ और प्रतिबंधित संगठन के खिलाफ विश्वविद्यालय प्रशासन ने कार्रवाई क्यों नहीं की। फिर सवाल यह भी है कि कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी विश्वविद्यालय में जाकर छात्रों के समर्थन में धरना देते वक्त क्या इस बात को मान रहे हैं कि उनकी पार्टी की सरकार ने अफजल गुरू के साथ नांइसाफी की.. वक्त आ गया है कि इन सवालों से भी मुठभेड़ किया जाय और इस विश्वविद्यालय को राजनीति का अखाड़ा बनाने की बजाय पठन–पाठन का केंद्र ही रहने देने में सहयोग किया जाये।

(लेखक टेलीविजन पत्रकार है और लाइव इंडिया टीवी चेनल में वरिष्ठ पद पर कार्यरत है।)

यह लेख राज एक्सप्रेस में प्रकाशित है।

अभाविप का मोबाइल ऐप
डाउनलोड
करने की लिंक आपको
ABVP के
अधिकारिक अकाउंट
http://www.facebook.com/ABVPVOICE
https://twitter.com/abvpcentral
पर और वेबसाइट
www.abvp.org
पर भी उपलब्ध रहेगी।

अभाविप ने फूंका शिक्षा मंत्री का पुतला

मधेपुरा। भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय में पिछले कई दिनों से जारी हड़ताल के कारण छात्रों का भविष्य चौपट हो रहा है। जबकि राज्य के शिक्षा मंत्री मूक दर्शक बने बैठे हैं। इस बीच अपने आक्रोश को दर्शाते हुए अभाविप ने शिक्षा मंत्री का पुतला फूंका और शिक्षा की इस बदहाली का ठीकरा उनके सरकार की गलत नीतियों पर फोड़ा।

पुतला दहन करते हुए अभाविप के विश्वविद्यालय संयोजक राहुल यादव ने कहा कि विवि के अस्थायी कर्मचारी अपनी सेवा सामंजन और अन्य किसी को भी नियुक्ति आउट सोर्सिंग से नहीं करने की मांग को लेकर 17 फरवरी से ही हड़ताल पर हैं और पूरे विश्वविद्यालय का कामकाज ठप है। इसके कारण दूर दूर से आने वाले छात्र मायूस होकर लौट रहे हैं। माइग्रेशन, प्रमाण पत्र, अंक पत्र आदि नहीं मिलने के कारण अन्यत्र नामांकन या नौकरी के अवसर गवांना पड़ रहा है। लेकिन इसकी सुधी न तो विश्वविद्यालय के पदाधिकारी ले रहे हैं और न ही राज्य सरकार। ऐसे में अगर सरकार की ओर से कोई भी पहल की जाती जिससे बीच का कोई रास्ता निकल सके तो मामला इस हद तक ना बिगड़ता। मगर शिक्षा मंत्री और सरकार दोनों ही हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और सिर्फ छात्रों के समय को खराब होते देख रहे हैं।

इस अवसर पर प्रदेश कार्य समिति सदस्य ईसा असलम, सहमंत्री नीतीश कुमार आदि ने कहा कि अगर अस्थायी कर्मचारियों की मांग जायज है तो हमारी भी मांग जायज है। अभाविप इस मनमानी के विरूद्ध उग्र आंदोलन शुरू करेगा।

फीस वृद्धि के खिलाफ अभाविप ने मुख्यमंत्री आवास पर किया प्रदर्शन

नई दिल्ली। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में छात्रों ने इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय की फीस वृद्धि के विरोध में मुख्यमंत्री आवास पर विरोध प्रदर्शन किया। अभाविप की मांग थी कि अगर सरकार इसी तरह फीस में वृद्धि करती रही तो सबको शिक्षा का जो प्रण केंद्र सरकार ने लिया है, वह कभी पूरा ही नहीं हो पायेगा।

फीस वृद्धि का विरोध करते हुए परिषद् कार्यकर्ताओं का कहना था कि एक तो पहले ही प्रवेश के नाम पर काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। उस पर अब अगर ऐसी ही थोड़े–थोड़े समय पर फीस में बढ़ोत्तरी होती रही तो उनकी पढ़ाई बाधित होगी। ऐसे में दिल्ली सरकार के फीस वृद्धि की बातों का किसी भी तौर पर समर्थन नहीं किया जा सकता। इसी बात को लेकर आक्रोशित छात्रों ने मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल के आवास पर उनसे मुलाकात की और अपना पक्ष रखा। जिसके बाद केजरीवाल ने ट्वीट कर दो दिनों के अंदर फीस वृद्धि के निर्णय पर पुनर्विचार कर निर्णय वापस लिये जाने की बात कही। साथ ही भरोसा दिलाया कि उनकी सरकार छात्रों की शिक्षा प्रभावित नहीं होने देगी।

विदित हो कि हाल में ही दिल्ली सरकार द्वारा इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय की फीस में भारी मात्रा में वृद्धि का निर्णय लिया गया था। साथ ही दिल्ली सरकार द्वारा विगत दो वर्षो की बढ़ी हुई फीस लेने का भी निर्णय लिया गया। इस निर्णय के चलते सामान्य छात्रों पर अत्यधिक आर्थिक दबाव आ गया था।

क्षिप्रा के तट पर अमृत का मेला

सिंहस्थ
कुंभ महापर्व 2016
विक्रम संवत् 2073

22 अप्रैल - 21 मई, 2016

www.simhasthujjain.in /SimhasthUjjain2016 /Simhasth

RNI No. 32464/78

छत्तीसगढ़

उच्च शिक्षा हेतु नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के बच्चों को शून्य प्रतिशत पर और सामान्य क्षेत्र के बच्चों को एक प्रतिशत रियायती ब्याज दर पर ऋण प्रावधान करने वाला राज्य

- राजकीय विश्वविद्यालयों की संख्या -08
- शासकीय महाविद्यालयों की संख्या-214
- निजी एवं शासकीय महाविद्यालयों की संख्या-472
- बिलासपुर में केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना।
- बालिकाओं को स्नातक तक निःशुल्क शिक्षा
- 50 इंजीनियरिंग कॉलेज - 16,833 स्वीकृत सीटें
- 51 पॉलिटेक्निक कॉलेजों की संख्या - स्वीकृत सीटें 8,074
- 23 स्नातकोत्तर पाठयक्रम
- 163 शासकीय आईटीआई - स्वीकृत सीटें 18,184
- 96 निजी आईटीआई - सीटें 10,816
- 6 मेडिकल कॉलेज, 6 डेन्टल कॉलेज, 7 आयुर्वेदिक कॉलेज सहित 30 मेडिकल एजुकेशन इंस्टीट्यूट

IIM
AIIMS
NIT
HNLU
IIT
IIIT